POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A-III (Hons.), Paper-V

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur

विज्ञान और लोक प्रशासन

अनेक विद्वानों के द्वारा लोक प्रशासन को भौतिक, रसायन, गणित आदि की भांति विज्ञान मानने का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया। लोक प्रशासन की वैज्ञानिकता की स्थापना करने वाले अधिकांश विधाक संयुक्त राज्य अमेरिका के हैं। विज्ञान ज्ञान की वह शाखा है जो तथ्यों को व्यवस्थित रूप से संजोती है और सामान्य नियमों को खोज निकालने का प्रयत्न करती है।

लोक प्रशासन को विज्ञान मानने के कारण

(1) लोक प्रशासन अपने वर्तमान स्वरूप में एक विज्ञान ही है—

कुछ विधाकों का यह मानना है कि लोक प्रशासन अपने वर्तमान स्वरूप में एक विज्ञान है। इसके अध्ययन के लिए ऐसे तथ्यों का संग्रह कर लिया गया है जिन पर वैज्ञानिक अध्ययन की पद्धतियों का प्रयोग किया जा रहा है। लोक प्रशासन में नए-नए खोज हो रहे हैं और साथ ही सामान्य सिद्धांत भी निकाले जा रहे हैं। इसमें भी तथ्यों को क्रमबद्ध करना, उसमें कार्य-कारण सम्बंध स्थापित करने के उपरांत सामान्यीकरण करना तथा पूर्व-कथन

Scanned with CamScanner

करने की क्षमता का विकास हुआ है।

② लोकप्रशासन में काफी यथार्थता और निश्चितता है:—

कतिपय विद्वान लोक प्रशासन में काफी यथार्थता और निश्चितता का दावा करते हैं। उनका मानना है कि लोक प्रशासन में निष्कर्ष के बारे में काफी यथार्थता है।

③ सामान्यीकरण संभव :—

कई विद्वान जो लोक प्रशासन को विज्ञान के समकक्ष मानते हैं उनका कहना है कि इसमें भी सामान्यीकरण संभव है। विज्ञान की भांति इसमें भी क्रमबद्ध अध्ययन कर सामान्य सिद्धांत का निर्माण किया जा सकता है।

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर लोक प्रशासन को विज्ञान मानना उचित है। लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि उसमें भौतिक विज्ञानों की तरह पूर्णता नहीं पाई जाती है। लोक प्रशासन अन्य सामाजिक विज्ञानों की तरह विज्ञान अवश्य है, परन्तु यह प्राकृतिक विज्ञानों की भांति विज्ञान नहीं है। पर यह भी सही है कि इसमें भी कतिपय मामलों में विज्ञान की भांति निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner